The Researchers' - Volume VIII, Issue II, 15 July-2022 ISSN : 2455-1503
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
Impact Factor - 5.882

Date of Acceptance : 11 May 2022 DOI - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

© Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya

6. The World And Glory Of Man-Woman Relationship

*Dr. Rajesh Kumar Sethiya[1], Deepak Kumar Sethiya[2]

[1]Assistant Professor, Hindi, Government Naveen College Tokapal, Bastar
[2]Teacher, L. B. M. S. Pulcha Dist. Bastar

Abstract

Gulsher Khan Shani has been a famous storyteller of the Nai Kahaani movement in hindi. In addition to his famous works like "Kalajal", "Snakes and Ladders" and "Island of Salvans", he also penned roughly 90 short stories about the people and culture of the Bastar region. His tales tend to morph into many different forms.His tales also provide a window into Muslim culture, as well as that of tribal societies, small towns, and large cities.

The irony of the male-female relationship has not been lost from the point of view of elegance. It has been agitating and stirring their mind and consciousness continuously.

From his first short story collection, "Babool Ki Chhaon" to his last collection of short stories—"Jahanpanah, Jungle Ki Kayani, and throughout his novels, he has dealt with this aspect of human relations with full creativity and creativity and has inspired the reader community to think about it. In these stories, the lack of mutual trust and sincerity between men and women is their basic statement and the discrepancy arising from it is the root voice.

Key Words: *Gulsher Khan Shani, Nai Kahaani movement, Male-female relationship*

Citation : Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya (2022). The World And Glory Of Man-Woman Relationship, **The Researchers** – July 2022, 8(2): 55-61. doi - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

The Researchers' - Volume VIII, Issue II, 15 July-2022
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 11 May 2022
DOI - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

© Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya

6. स्त्री–पुरुष संबंधों की दुनियां और शानी

*Dr. Rajesh Kumar Sethiya[1], Deepak Kumar Sethiya[2]

[1]Assistant Professor, Hindi, Government Naveen College Tokapal, Bastar
[2]Teacher, L. B. M. S. Pulcha Dist. Bastar

गुलशेर खां शानी हिंदी में नई कहानी आंदोलन के लिए प्रसिद कथाकार रहे हैं। बस्तर अंचल के जीवन पर कालाजल, साँप और सीढ़ी, सालवनों का द्वीप जैसी रचनाओं के अलावा उन्होंने लगभग 80 कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियों के कई रुप हैं।

मुस्लिम जीवन, आदिवासी जीवन, कस्बाई तथा महानगरीय जीवन के चित्रों की झलक भी उनकी कहानियों में है।

स्त्री–पुरुष संबंधों की बिडंबना शानी की दृष्टि से ओझल न हो सकी है। यह उनकी जेहन और चेतना को निरंतर आंदोलित और उद्वेलित करती रही है। इसी की परिणति है कि अपने पहले कहानी संग्रह बबूल की छांव से अपनी अंतिम कहानी संग्रह जहांपनाह जंगल की कुछ कहानियों तक तथा उपन्यासों में भी उन्होंने मानव संबंधों के इस पहलू पर पूरी सृजनात्मता और रचनात्मकता से विचार किया है और पाठक समुदाय को इस पर सोचने को विवश किया है। इन कहानियों में "स्त्री–पुरुष में पारस्परिक विश्वास और इमानदारी का अभाव उनका मूल कथन है और उससे उपजी विसंगती मूल स्वर है।"[1]

इस वर्ग की कहानियों को भी दो वर्गों में बांटा जा सकता है। पहले वर्ग में सामाजिक जीवन में स्त्री–पुरुष संबंधों को सामाजिक संदर्भों में देखा गया है। दूसरे वर्ग की कहानियों में स्त्री–पुरुष संबंधों की एकरसता एवं इसे तोड़ने की जद्दो – जहद में शामिल पात्रों की गाथा है। इस वर्ग की कहानियों में नगरीकरण, आधुनिकीकरण – पाश्चात्यीकरण का प्रभाव है।

Citation : Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya (2022). The World And Glory Of Man-Woman Relationship, The Researchers – July 2022, 8(2): 55-61. doi - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

The Researchers' - Volume VIII, Issue II, 15 July-2022
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 11 May 2022
DOI - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

© Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya

पहले वर्ग में देखें, तो "शेफाली" की खामोश ख्यालों और पीले चेहरे वाली युवती, एक बच्ची की मां शेफाली अपने अभिशप्त वैवाहिक जीवन की विडंबना भोगते–भोगते करुण मौत मरती है। पति द्वारा त्यक्त होते हुए भी वह उसे त्याग नहीं पाती और आफताब के प्रणय–निवेदन को अस्वीकृत कर पुरुष के अभाव में घुट–घुटकर मरती है। पत्रात्मक शैली में लिखे गए "नारी और प्यार" में नारी को समझने के साहित्यिकों के परंपरागत दृष्टिकोण का खंडन है। चढ़ती जवानी के दिनों का भावनात्मक आकर्षण प्रेम से भिन्न होता है। बाढ़ के पानी के उतर जाने पर जैसी वस्तु स्थिति का ज्ञान होता है, वैसी ही भावना के ज्वार के उतर जाने पर होता है। रेनू उसकी याद में कमल के अविवाहित रहने को कमल की अकारण भावुकता मानती है और उसे विवाहित–गृहस्थ–जीवन के सुख के लिए प्रेरित करती है। अपने पति और बच्ची के हवाले से वह अपने भावनात्मक समृद्ध पारिवारिक जीवन का संकेत भी देती है। अपने प्रेमी कमल के इस दुखी, अविवाहित और बेचैन जिंदगी के लिए रेनू स्वयं को अपराधी मानती है और कमल के होठों पर मुस्कान बिखेरने का संकल्प लेती है।

"पहाड़ और ढलान" के पहाड़ प्रेम के प्रतिवाद और ढलान अंततः उस फिसलन का प्रतीक है जिसमें सामाजिक हैसियत से अधिक महत्व आदमी कलात्मक, सांस्कृतिक गुणवत्ता और अभिरुचियों का है। स्पष्ट ही इस प्रेम में आवेग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका बुद्धि की है, जो जीवन को पूरे ठहराव के बीच देखे जाने पर जोर देती है।

"राख" में अपने बेतरतीब वालों में राख की परत के लिए सिगड़ी में कोयलों को फूंकने वाली नीली अपने मरणासन्न कैंसर रोगी पति हरीश की परिचर्या में जुटी है। राख केवल नीली के बेतरतीब बालों में ही नहीं भरी है, वरन् उसकी पूरी जिंदगी को राख की परतों में लपेटकर उसका मरणासन्न पति अभी भी मृत सकीना की यादों में खोया रहता है – नीली के प्रति संदेह और ईर्ष्या में सुलगता हुआ और उससे पूरी तरह अक्षत और एकनिष्ठा बनी रहने की अपेक्षा के साथ। उधर नीली भी हरीश की बुराईयों के बावजूद उसके प्रति पूर्ण समर्पित है। वह हरीश से कहती है– "इन आंखों में मेरा सुनहला संसार दफन है। ये होंठ आज भी, हरीश के होंठ हैं, मेरे हरीश के।" [2]

Citation : Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya (2022). The World And Glory Of Man-Woman Relationship, **The Researchers** – July 2022, 8(2): 55-61. doi - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

The Researchers' - Volume VIII, Issue II, 15 July-2022
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 11 May 2022
DOI - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

© Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya

"बबूल की छांव" की मिलनसार, हंसमुख यौवना मिसेज सेन एक अच्छा पति पाकर भी विवाहित जीवन से संतुष्ट नहीं है। अपने अनुभव का निचोड पेश करती हुई पीड़ा के साथ वह कहती है– "ब्याह का सुख, बबूल की छांव है... पतली, विरली और कंटीली, जिसमें कोई ठहराव नहीं यह अलग बात है कि उसकी चुभन को ही ठंढक जानकर हम संतोष मान लेते हैं।" [3] मिसेज सेन का हंसमुख, मिलनसार व्यवहार चेहरे का गोरा रंग सुंदर और मांसल देह आदि अंततः उसके दुःख को बढ़ाते हैं क्योंकि इन्हीं के कारण उसके पति उस पर शक और संदेह करते है। लेकिन मिसेज सेन का आत्म सम्मान इस मामले में किसी भी तरह की सफाई देना उचित नहीं समझता। लेकिन एक ही घर और एक ही कमरे में दो–दो हफ्ते बात किए बिना क्या सचमुच रहा जा सकता है?

तब तो और भी नहीं जब उसका छुआ खाना पाप समझ लिया जाए। आसमान पर छाए बादल उमस तौर घुटन के बाद भले ही भहराकर बरस पड़े, लेकिन मिसेज सेन की जिंदगी पर छाए बादल बरस भी नहीं पाते जैसे एक स्थायी घुटन और उमस ही उसकी नियति है।

शानी के पहले कहानी संग्रह "बबूल की छाँव" की इन कहानियों के स्त्री–पुरूष संबंधों का यह रूप थोड़ा रुमानियत लिए हुए है, परंतु नारी–पुरूष संबंधों की चुभन को अपने छोटे वृत्त में समेटे हुए है। कालांतर में स्त्री–पुरूष संबंधों का यह वृत्त जीवन के घातं–प्रतिघातों तथा अनुभवात्मक समृद्धि अर्जित करता हुआ विस्तीर्ण होता गया और नारी–पुरूष संबंध के अनछुए पहलुओं से साक्षात्कार कराता गया। ये रोमानी यथार्थ परक कहानियाँ कालांतर में यथार्थोन्मुख होती गई। इनकी मध्यवर्ती कड़ी के रूप में "एक और मौत", "एक और सच", "छोटे घेरे का विद्रोह", "इज्जत का सवाल" तथा "अपनी–अपनी सीमाएं" कही जा सकती हैं।

"एक और मौत" में सेक्स अभिरूचियों के प्रति जिज्ञासु रम्मू की भावनाएं आहत होती है जब वह सुनता है कि रेवती जिज्जी मरियल पंडित के साभ भाग गयी है। एक और सच में हनी के माता–पिता के दाम्पत्य जीवन में मुन्ने चाचा का आगमन विष घोलता है । चुड़ियों के टूटने पर प्यार की परख" वाले खेल में प्यार की परख भले न हो, संबंधों की परख तो होती ही है। हनी के पिता की मृत्यु के बाद उसका प्रेमी उप्पल विवाह न करने के अनेक बहानों से उसे विरक्त कर देता है। अपनी–अपनी सीमाएँ"

Citation : Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya (2022). The World And Glory Of Man-Woman Relationship, **The Researchers** – July 2022, 8(2): 55-61. doi - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

The Researchers' - Volume VIII, Issue II, 15 July-2022 ISSN : 2455-1503
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
Impact Factor - 5.882

Date of Acceptance : 11 May 2022 DOI - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

© Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya

में इस बात का चित्रण है कि नारी–पुरूष द्वारा परस्पर सीमाओं का अतिक्रमण किस तरह दो पड़ोसी परिवारों में विष घोलता है।

धूप के टुकड़े में सरला नौकरानी कुचाल के साथ अपने इंस्पेक्टर पति के संबंधों की कल्पना और उसकी बच्ची से समानता पाकर उसे घर से निकाल देती है। छोटे घेरे का विद्रोह में पति से सामान्य शारीरिक संबंध के अभाव में तड़पती मिसेज शुक्ला अपने पति को बरगलाने के लिए पति की चट्टान सी शांत निश्चल मुद्रा को भंग करने के लिए मेनका के चरित्र को अपनाती सी लगती है। विश्वामित्र भले ही हार गये हो नारी से , पर गिरीश जी अविचल बने रहे अपनी भ्रांति में अपने गठानों के साथ। मिसेज शुक्ला की शारीरिक–जैविक और भावात्मक अतृप्ति के आगे गिरीश जी बौने नजर आते हैं। "गिरीश जी को कहने का कुछ भी अवसर दिए बिना बेतहाशा और ताबड़तोड़ चूमने लगी। यहां तक कि अंत में स्वंय थककर हांफने लगी और हांफती–हांफती ही उसकी बगल में लुढ़क पड़ी।" [4] अपने पति से शारीरिक–संसर्ग की सहज स्वाभाविक और मामूली जरुरत के लिए भी मिसेज शुक्ला को सारे मुहल्ले वालों से ताने सहने पड़ते हैं। लोग उन पर संदेह करते हैं। कथा वाचक मैं भी तटस्थ नहीं हो पाता–वह भी उस वर्ग में शामिल होकर पत्नी की इच्छा से मकान बदल लेता है।

"इज्जत का सवाल" की इला का चरित्र "त्यागपत्र" के मृणाल के चरित्र से मेल खाता है। बालाधाट में इज्जत के साथ रहने वाली इला को उसके शराबी पिता द्वारा 'अविवाहित बुढ़ी' कहने की बात मन में ऐसी चुभती है कि इज्जत के घर को छोड़कर वह ब्लैक मेल करके एक बदसूरत से कंपाउंडर श्यामलाल की रखैल बनी रहने में ही संतुष्ट है। यही उसके लिए "इज्जत का सवाल" है। इस जीवन में किसी परिचित की आहट मात्र से भी वह डर जाती है।

शानी की स्त्री–पुरूष संबंधों की कहानियों के दूसरे वर्ग में, नगरीकरण, यांत्रिकता, औद्योगीकरण एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से दाम्पत्य जीवन में पति–पत्नी के मध्य आई ऊब, एकरसता एवं नीरसता का जिक्र है। यहाँ भरपूरे घर परिवार, मर्यादाओं को तिलांजली देते, महज थ्रिल–एडवेंचर के लिए निकलते स्त्री–पुरूषों की विडंबना का अंकन है। श्री मूलचंद गौतम के शब्दों में– "नगरों में यांत्रिकता के बढ़ने से मानवीय मूल्यों में जो ह्रास हुआ है और आदमी को निरंतर नये से नये षडयंत्रों में जीना पड़

Citation : Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya (2022). The World And Glory Of Man-Woman Relationship, **The Researchers** – July 2022, 8(2): 55-61. doi - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

The Researchers' - Volume VIII, Issue II, 15 July-2022
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 11 May 2022
DOI - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

© Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya

रहा है, उसने काफी हद तक न केवल उसे तोड़ा है, वरन् मानसिक रूप में भी अस्त–व्यस्थ कर दिया है। ऊब, अकेलेपन और एकरसता को तोड़ने के लिए मध्यमवर्गीय स्त्री–पुरूषों ने कभी मात्र एडवेंचर और कभी अपने अस्तित्व की पहचान के लिए परंपरागत मर्यादा को लांघने की कोशिश की है। मध्यमवर्गीय व्यक्तियों और समाज में इस तरह के संबंधों का स्वरूप बहुत विचित्र होता है। [5]

शानी की प्रयोगधर्मी विशिष्ट कहानी "पड़ाव" में पुरुष विवाहित पारिवारिक जीवन में भी तृप्त नहीं है। उसकी विसंगति को लेखक इन शब्दों में अभिवयत करता है –"पहचानता मैं भी खूब हूँ। बल्कि क्यों कहना चहिए कि शायद मैं जरूरत से ज्यादा पहचानता हूँ। अगर ऐसा न होता, तो ब्याह के इन दस बर्षों में यही सब देखने के लिए मैंने हजार जतन कभी न किये होते। खासकर इधर के वर्षों में जबकि पत्नी मुझे बेहद ठंडी लगने लगी थी। अपनी सीमाओं के साथ मैंने कई बार कोशिश की थी, लेकिन हर बार निराश होना पड़ा था। चाहे कितनी ही सुंदर स्त्री का मामला क्यों न हो, न तो पत्नी ईर्ष्या करती थी और ने मुझे ईष्या का मौका देती थी और अक्सर मुझे लगता था जैसे हम दोनों स्त्री–पुरुष न होकर काठ के पुतले हों।" [6] दूसरी ओर ब्याहता स्त्री भी स्वाधीन–चेतना और अल्हड–जीवन की अभिव्यक्ति करती हुई पुरूष जाति का मूल्यांकन करती हुई कहती है– "मैं अभी भी जवान हूँ, शरीर मेरा अभी भी इतना आकर्षक है कि अक्सर लोगों को मैं कम उम्र और अविवाहित लड़की लगती हूं। मुमकिन है, मेरी बातों में अहम्मन्यत्ता की बू आए, लेकिन यह सच है ब्याह जैसी संस्था की दीवारों के बाहर आकर मुझे पुरूष जाति के ऐसे–ऐसे अजीब–अजीब अनुभव हुए हैं कि अब उससे न डर लगता है और न प्रेम उमड़ता है। अधिक से अधिक वे मुझे दया के पात्र लगते हैं।" [7] ये जुमले स्त्री पुरूषों के कुंठा, निराशा और उनके जीवन में व्याप्त विसंगति की इंगित करते हैं।

"शहर" कहानी, शहरी जीवन की यांत्रिकता और खोखलेपन को उद्घाटित करता है। कथावाचक मैं का पुत्र और मिसेज मेहरा इसी यांत्रिकता की भेंट चढ़ गए। मैं और अख्तर रंजन से इसलिए मित्रता करते हैं कि उसकी बीवी मिसेज मेहरा बहुत ही खूबसूरत और रिस्पांसिव है– 'जल भीगे गुलाब' की तरह। मिसेज़ मेहरा से असफल मैं" कल्याणी की ओर मुड़ जाता है और प्रेम–भ्रम बनाये रखता है, लेकिन जब नगर. छोड़ने का फैसला करता है, तब वह कल्याणी के बारे में सोचता तक नहीं, मानो वह "मिलने,

Citation : Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya (2022). The World And Glory Of Man-Woman Relationship, **The Researchers** – July 2022, 8(2): 55-61. doi - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

The Researchers' - Volume VIII, Issue II, 15 July-2022
International Research Journal (Double-blind peer-reviewed)
ISSN : 2455-1503
Impact Factor - 5.882
Date of Acceptance : 11 May 2022
DOI - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6

© Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya

बैठने, शामें गुजारने और कल्याणी से सुख निचोड़ने के लिए जितना स्वंतत्र है उतना ही स्वतंत्र वह किसी भी पल निकल भागने के लिए भी है। मानो कल्याणी मन या तन की जरूरत पड़ने पर चुपचाप काम आने वाले सुख के माध्यम से अतिरिक्त अपने आप में कुछ न हो।"[8]

इस प्रकार शानी की स्त्री–पुरुष संबंधों के सामाजिक ताने–बाने के साथ, यांत्रिकता ऊब नीरसता से उभरते हुए छटपटाहट के रुप में कहीं व्यक्त है और कहीं जैविक अभिव्यक्ति आवश्यकता के भ्रम से भर आक्रांत है।

संदर्भ

- हिंदी कहानी का सफरनामा – डा धनंजय वर्मा – पृ. 197
- बबूल की छांव – शानी – पृ. 120
- वही पृ. 161
- सब एक जगह – 2 – शानी – पृ. 88
- शानीः आदमी और अदीब – सं. डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा – पृ 132
- सब एक जगह – 1 –शानी – पृ. 194
- वही– पृ. 198
- सब एक जगह – 2 –शानी – पृ. 186

Citation : Dr Rajesh Kumar Sethiya & Deepak Kumar Sethiya (2022). The World And Glory Of Man-Woman Relationship, **The Researchers** – July 2022, 8(2): 55-61. doi - 10.21276/tr.2022.8.2.AN6